

रिसर्च • आईआईटी इंदौर, अमेरिका और यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्दर्न ब्रिटिश कोलंबिया के शोधार्थियों की स्टडी जलवायु परिवर्तन के कारण तेजी से पिघल रहे हिमालय व काराकोरम के ग्लेशियर, सदी अंत तक एक अरब लोग करेंगे जलसंकट का सामना

भास्कर संवाददाता | इंदौर

जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालय और काराकोरम के ग्लेशियर तेजी से कम हो रहे हैं। इस कारण पड़ोसी देशों की जलापूर्ति प्रभावित हो रही है, क्योंकि ये देश उन नदियों पर आश्रित हैं जो इन पर्वत श्रृंखलाओं से निकलती हैं। इन ग्लेशियर के पिघलकर कम होते जाने से सदी के अंत तक पड़ोसी देशों के करीब एक अरब लोग जल संकट का सामना करेंगे।

ये नतीजे हाल ही में साइंस जर्नल में प्रकाशित ग्लेशियो-हाइड्रोलॉजी ऑफ हिमालय-काराकोरम नामक स्टडी में सामने आए हैं। आईआईटी इंदौर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मोहम्मद फारुख आजम, रिसर्च स्कॉलर स्मृति श्रीवास्तव, अमेरिका के प्लैनेटरी साइंस इंस्टिट्यूट के जेफ कागेल और यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्दर्न ब्रिटिश कोलंबिया के जोसफ शी ने स्टडी की है।

2050 तक नदियों में पानी बढ़ेगा, फिर कम होता चला जाएगा

हिमालय के ग्लेशियरों का 10 वर्ष से अधिक समय से अध्ययन कर रहे डॉ. फारुख आजम ने बताया एक अरब से अधिक लोग हिमालय और काराकोरम पर्वतों के ग्लेशियर का पानी लेते हैं। इनकी अधिकांश बर्फ पिघलने से लोगों को इनसे मिलने वाला पानी धीरे-धीरे बंद हो जाएगा। हालांकि पानी की मात्रा अलग-अलग क्षेत्रों में अलग होगी। सबसे ज्यादा प्रभाव इंडस बेसिन वाले क्षेत्रों पर होगा। गंगा और ब्रह्मपुत्र बेसिन में इन घटनाओं का क्या प्रभाव होगा ये इस पर निर्भर करेगा कि ये घटनाएं मानसून को कितना प्रभावित करती



हैं, क्योंकि गंगा और ब्रह्मपुत्र बेसिन मानसून आधारित बेसिन हैं। स्मृति श्रीवास्तव के अनुसार 2050 तक ग्लेशियरों के पिघलने से नदी में पानी की मात्रा और बढ़ाव बढ़ेगा। फिर कम होता जाएगा। हालांकि कुछ हद तक ही इसका अनुमान लगा सकते हैं। ये तीनों परिवर्तन अनिश्चितताओं से भरे होंगे।

जलवायु परिवर्तन के बारे में वैज्ञानिक जानकारी भी कम

प्लैनेटरी साइंस इंस्टिट्यूट अमेरिका के जेफ कागेल के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के बारे में अभी भी सटीक जानकारी का अभाव है। कई क्षेत्रों में रिमोट सेंसिंग और मॉडलिंग रिसर्च की जरूरत है। ग्लेशियर के वास्तविक आयतन, पहाड़ों की ऊंचाई के अनुसार बारिश की मात्रा में होने वाले बदलाव की विस्तृत जानकारी नहीं है। पर्माफ्रॉस्ट, सब्लिमेशन, ब्लैक कार्बन और मलबे के आवरण के प्रभाव की विस्तृत जानकारी भी नहीं है।